करवा चौथ, अहोई अष्टमी

धनतेरस, दीपावली, भैयादूज, गोवर्धन पूजा

पूजा विधि, कथा, उजमन तथा आरती सहित

卐 श्री गणेशाय नमः 卐

करवा चौथ, अहोई अष्टमी व्रत कथा

दीपावली, गोवर्धन पूंजा, भैया दूज

पूजा, विधि, कथा, उजमन तथा आरती सहित

करवा चौथ का व्रत

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवा चौथ कहते हैं। इसमें गणेशजी का पूजन करके उन्हें पूजन दानादि से प्रसन्न किया जाता है। इसका विधान चैत्र की चतुर्थी में लिख दिया है परन्तु विशेषता यह है कि इसमें गेहूँ का करवा भरकर पूजन किया जाता है और विवाहित लड़कियों के यहाँ चीनी के करवे पीहर से भेजे जाते हैं तथा इसमें निम्नलिखित कहानी सुनकर चन्द्रोदय में अर्घ्य देकर व्रत खोला जाता है-

कथा- एक साहूकार के एक पुत्री और सात पुत्र थे। करवा चौथ के दिन साहूकार की पत्नी, बेटी और बहुओं ने व्रत रखा। रात्रि को साहूकार के पुत्र भोजन करने लगे तो उन्होंने अपनी बहन से भोजन करने के लिए कहा। बहन बोली- ''भाई! अभी चन्द्रमा नहीं निकला है, उसके निकलने पर मैं अर्घ्य देकर भोजन करूँगी।'' इस पर भाइयों ने नगर से बाहर जाकर अग्नि जला दी और छलनी ले जाकर उसमें से प्रकाश दिखाते हुए बहन से कहा- ''बहन! चन्द्रमा निकल आया है, अर्घ्य देकर भोजन कर लो।''

बहन अपनी भाभियों को भी बुला लाई कि तुम भी चन्द्रमा को अर्घ्य दे लो, किन्तु वे अपने पतियों की करतूत जानती थीं। उन्होंने कहा- ''बाईजी! अभी चन्द्रमा नहीं निकला है। तुम्हारे भाई चालाकी करते हुए अग्नि का प्रकाश छलनी से दिखा रहे हैं।'' किन्तु बहन ने भाभियों की बात पर ध्यान नहीं दिया और भाइयों द्वारा दिखाए प्रकाश को ही अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार व्रत भंग होने से गणेश जी उससे रुष्ट

हो गए। इसके बाद उसका पति सख्त बीमार हो गया और जो कुछ घर में था, उसकी बीमारी में लग गया। साहूकार की पुत्री को जब अपने दोष का पता लगा तो वह पश्चातप से भर उठी। गणेश जी से क्षमा-प्रार्थना करने के बाद उसने पुनः विधि-विधान से चतुर्थी का व्रत करना आरम्भ कर दिया। श्रद्धानुसार सबका आदर-सत्कार करते हुए, सबसे आशीर्वाद लेने में ही उसने मन को लगा दिया।

इस प्रकार उसके श्रद्धाभक्ति सहित कर्म को देख गणेश जी उस पर प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसके पति को जीवनदान दे उसे बीमारी से मुक्त करने के पश्चात् धन-सम्पत्ति से युक्त कर दिया।

इस प्रकार जो कोई छल-कपट से रहित श्रद्धाभक्तिपूर्वक चतुर्थी का व्रत करेगा, वह सब प्रकार से सुखी होते हुए कष्ट-कंटकों से मुक्त हो जाएगा।

करवा चौथ का उजमन

एक थाल में चार-चार पूड़ियाँ तेरह जगह रखकर उनके ऊपर थोड़ा-थोड़ा हलवा रख दें। थाल में एक साड़ी, ब्लाउज और सामर्थ्यानुसार रुपये भी रखें। फिर उसके चारों ओर रोली-चावल से हाथ फेरकर अपनी सासूजी के चरण स्पर्श कर उन्हें दे दें। तदुपरांत तेरह ब्राह्मण/ब्राह्मणियों को आदर सहित भोजन कराएं, दक्षिणा दें तथा रोली की बिन्दी/तिलक लगाकर उन्हें विदा करें।

अहोई आठे अष्टमी व्रत के पूजन की विधि

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को किया जाता है। जिस दिन (वार) की दीपावली होती है, उससे ठीक एक सप्ताह पूर्व उसी दिन (वार) को अहोई अष्टमी पड़ती है।

व्रत करने वाली स्त्री को इस दिन उपवास रखना चाहिए। सायंकाल दीवार पर अष्ट कोष्ठक की अहोई की पुतली रंग भरकर बनाएं। पुतली के पास सेई व सेई के बच्चे भी बनाएं, चाहें तो वना-वनाया चार्ट रुचिका पब्लिकेशन्स का बाजार से खरीद सकती हैं।

सूर्यास्त के बाद तारे निकलने पर अहोई माता की पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व जमीन को साफ करें। फिर चौक पूरकर, एक लोटे में जल भरकर एक पटरे पर कलश की तरह रखकर पूजा करें। पूजा के लिए माताएं पहले से चांदी का एक अहोई या स्याऊ और चांदी के दो मोती बनवाकर डोरी में डलवा लें। फिर रोली, चावल व दूध-भात से अहोई का पूजन करें। जल से भरे लोटे पर स्वास्तिक बना लें। एक कटोरी में हलवा तथा सामर्थ्यानुसार रुपये का वायना निकालकर रख लें और हाथ में सात दाने गेहूँ लेकर कथा सुनें। कथा सुनने के बाद अहोई स्याऊ की माला गले में पहल लें और जो बायना निकाला था, उसे सासूजी का चरण स्पर्श कर उन्हें दे दें।

इसके बाद चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करें। दीपावली के पश्चात् किसी शुभ दिन अहोई को गले से उतारकर उसका गुड़ से भोग लगाएं और जल के छींटे देकर आदर सहित स्वच्छ स्थान पर रख दें। जितने बेटे अविवाहित हों, उतनी बार एक-एक तथा जितने बेटों का विवाह हो गया हो, उतनी बार दो-दो चांदी के दाने अहोई में डालती जाएं। ऐसा करने से अहोई देवी प्रसन्न होकर बेटों की दीर्घायु करके घर में मंगल करती हैं। इस दिन ब्राह्मणों को पेठा दान करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

अहोई व्रत का उजमन- जिस स्त्री के बेटा अथवा बेटे का विवाह हुआ हो, उसे अहोई माता का उजमन करना चाहिए। एक थाल में चार-चार पूड़ियाँ सात जगह रखें। फिर उन पर थोड़ा-थोड़ा हलवा रख दें। थाल में एक तीयल (साड़ी, ब्लाउज) और सामर्थ्यानुसार रुपये रखकर, थाल के चारों ओर हाथ फेरकर सासूजी के चरण स्पर्श करें तथा उसे सादर उन्हें दे दें। सासूजी तीयल व रुपये स्वयं रख लें एवं हलवा-पूरी प्रसाद के रूप में बांट दें। हलवा-पूरी का बायना बहन-बेटी के यहाँ भी भेजना चाहिए।

अहोई अशोकाष्टमी का व्रत

यह व्रत प्रायः कार्तिक बदी अष्टमी को उसी वार को किया जाता है। जिस वार की दीपावली होती है। इस दिन स्त्रियों की आरोग्यता और दीर्घायु प्राप्ति के लिए अहोई माता का चित्र दीवार पर मांडकर पूजन किया जाता है।

विधि- अहोई का व्रत दिन भर किया जाता है, जिस समय तारा मंडल आकाश में उदय हो जाए उस समय वहाँ पर एक जल का लोटा रखकर चाँदी की स्याऊ और दो गुड़िया रखकर मौली नाल में पिरो लेवें। तत्पश्चात् रोली चावल से अहोई माता के सहित स्याऊ माता को अरचें और सीरा आदि का भोग लगाकर कहानी सुनें।

कथा- एक नगर में एक साहूकार रहा करता था, उसके सात लड़के थे। एक दिन उसकी स्त्री खदान में मिट्टी खोदने के लिए गई और ज्योंही उसने जाकर कुदाली मारी त्योंही सेई के बच्चे कुदाल की चोट से सदा

के लिए सो गए। इसके बाद उसने कुदाल को स्याहू के खून से सना देखा तो उसे सेई के बच्चों के मर जाने का बड़ा दु:ख हुआ परन्तु वह विवश थी और यह काम उससे अनजाने में हो गया था। इसके बाद वह बिना मिट्टी लिए ही खेद करती हुई अपने घर आ गई और उधर जब सेही अपने घर में आयी तो अपने बच्चों को मरा देखकर नाना प्रकार से विलाप करने लगी और ईश्वर से प्रार्थना की कि जिसने मेरे बच्चों को मारा है, उसे भी इसी प्रकार का कष्ट होना चाहिए।

तत्पश्चात सेही के श्राप से सेठानी के सातों लड़के एक ही साल के अन्दर समाप्त हो गए अर्थात् मर गए। इस प्रकार अपने बच्चों को असमय काल के मुंह में समाये जाने पर सेठ-सेठानी इतने दु:खी हुए कि उन्होंने किसी तीर्थ पर जाकर अपने प्राणों को तज देना उचित समझा। इसके बाद वे घर-बार छोड़कर पैदल ही किसी तीर्थ की ओर चल दिए और खाने की ओर कोई ध्यान न देकर जब तक उनमें कुछ भी शक्ति और साहस रहा तब तक वह चलते ही रहे और जब वे पूर्णत: अशक्त हो गए तो अन्त में मूर्छित होकर गिर पड़े। उनकी ऐसी दशा देखकर भगवान करुणा सागर ने उनको मृत्यु से बचाने के लिए उनके पापों का अन्त किया और इस अवसर पर आकाशवाणी हुई- हे सेठ! तेरी सेठानी ने मिट्टी खोदते समय ध्यान न देकर सेह के बच्चों को मार दिया, इसके कारण तुम्हें अपने बच्चों का दु:ख देखना पड़ा। यदि अब पुन: घर जाकर तुम मन लगाकर गऊ माता की सेवा करोगे और अहोई माता देवी का विधि-विधान से व्रत आरम्भ कर प्राणियों पर दया रखते हुए स्वप्न में भी किसी को कष्ट नहीं दोगे, तो तुम्हें भगवान की कृपा से पुन: संतान का सुख प्राप्त होगा।

इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर सेठ-सेठानी कुछ आशावान हो गए और भगवती देवी का स्मरण करते हुए अपने घर को चले आये। इसके बाद श्रद्धा-भक्ति से न केवल अहोई माता का व्रत अपित गऊ माता की सेवा करना भी आरम्भ कर दिया तथा जीवों पर दया भाव रखते हुए क्रोध और द्वेष का सर्वथा परित्याग कर दिया। ऐसा करने के पश्चात भगवान की कृपा से सेठ-सेठानी पुनः सात पुत्र वाले होकर अगणित्त पौत्रों सहित संसार में नाना प्रकार के सुखों को भोगने के पश्चात स्वर्ग को चले गए।

शिक्षा- बहुत सोच-विचार के बाद भली प्रकार निरीक्षण करने के पश्चात ही कार्य आरम्भ करो और अनजाने में भी किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। गऊ माता की सेवा के साथ-साथ ही अहोई माता अजन्मा देवी भगवती की पूजा करो। ऐसा करने पर अवश्य संतान सुख के साथ-साथ सम्पत्ति सुख प्राप्त होगा।

अहोई माता की दूसरी कथा

एक साहूकार था जिसके सात बेटे थे, सात बहुएं तथा एक बेटी थी। दीवाली से पहले कार्तिक बदी अष्टमी को सातों बहुएं अपनी ननद के साथ जंगल में खदान में मिट्टी लेने गई। जहाँ से वे मिट्टी खोद रही थीं वहीं स्याहू (सेहे) की मांद थी। मिट्टी खोदते समय ननद के हाथ सेही का बच्चा मर गया। स्याहू माता बोली कि अब मैं तेरी कोख बाँधूंगी। तब ननद अपनी सातों भाभियों से बोली कि तुममे से मेरे बदले कोई अपनी कोख बंधा लो। सब भाभियों ने अपनी कोख बंधवाने से इंकार कर दिया परन्तु छोटी भाभी सोचने लगी कि यदि मैं कोख नहीं बंधवाऊंगी तो सासूजी नाराज होंगी ऐसा विचार कर ननद के बदले में छोटी भाभी

ने अपनी कोख बंधवा ली। इसके पश्चात जब उसके जो लड़का होता तो सात दिन बाद मर जाता। एक दिन पंडित को बुलाकर पूछा कि क्या बात है मेरी संतान सातवें दिन क्यों मर जाती है? तब पंडित ने कहा कि तुम सुरही गाय की पूजा करो सुरही गाय स्याऊ माता की भायली है, वह तेरी कोख छोड़े तब तेरा बच्चा जियेगा। इसके बाद से वह बहू प्रातःकाल उठकर चुपचाप सुरही गाय के नीचे सफाई आदि कर जाती। गौ माता बोली कि आजकल कौन मेरी सेवा कर रहा है? सो आज देखूँगी। गौ माता खूब तड़के उठी, क्या देखती है कि एक साहूकार के बेटे की बहू उसके नीचे सफाई आदि कर रही है। गौ माता उससे बोली क्या माँगती है? तब साहूकार की बहू बोली कि स्याऊ माता तुम्हारी भायली है और उसने मेरी कोख बांध रखी है सो मेरी कोख खुलवा दो। गौ माता ने कहा अच्छा, अब तो गौ माता समुद्र पार अपनी भायली के पास उसको लेकर चली। रास्ते में कड़ी धूप थी सो वे दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गईं। थोड़ी देर में एक साँप आया और उसी पेड़ पर गरुड़ पंखनी (पक्षी) का बच्चा था। सांप उसको डसने लगा तब साहूकार की बहू ने साँप मारकर ढाल के नीचे दबा दिया और बच्चों को बचा लिया। थोड़ी देर में गरुड़ पंखनी आई तो वहाँ खून पड़ा देखकर साहूकार की बहू के चोंच मारने लगी। तब साहूकारनी बोली कि मैंने तेरे बच्चे को नहीं मारा बल्कि साँप तेरे बच्चे को डसने को आया था, मैंने तो उससे तेरे बच्चे की रक्षा की है। यह सुनकर गरुड़ पंखनी बोली कि माँग, तू क्या माँगती है? वह बोली सात समुद्र पार स्याऊ माता रहती है हमें तू उसके पास पहुँचा दे। तब गरुड़ पंखनी ने दोनों को अपनी पीठ पर बैठाकर स्याऊ माता के पास पहुँचा दिया।

स्याऊ माता उन्हें देखकर बोली कि आ बहन बहुत दिनों में आई, फिर कहने लगी कि बहन मेरे सिर में

दीपावली व्रत

कार्तिक कृष्णा अमावस्या को समस्त भारत में दीपावली का त्यौहार बड़े ठाठ-बाट से मनाया जाता है। यह वैश्य जाति का महानतम त्यौहार है। इसलिये नाना प्रकार से घर और दुकानों को सजाकर रात्रि को रोशनी की जाती है और भगवती लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा के साथ-साथ बही बसनों का पूजन किया जाता है। इसी दिन भगवती लक्ष्मी जी समुद्र से प्रकट हुई थीं और इसी दिन राजा बलि को पाताल का राजा बनाकर वामन भगवान ने उसकी ड्योढ़ी पर रहना स्वीकार किया तथा इसी दिन रामचन्द्र जी ने रावण को जीतकर सीता और सेना सहित अयोध्या में प्रवेश किया था एवं इसी दिन राजा वीर विक्रमादित्य ने सिंहासन पर बैठकर नवीन संवत् की घोषणा की थी। अतः इन सब कारणों को लेकर इस दिन भारी उत्सव मनाया जाता है और श्री लक्ष्मी जी गणेश जी के सहित सब देवताओं का पूजन करते हुए सुख सम्पत्ति की भगवान से याचना की जाती है।

श्री महालक्ष्मी जी पूजन सामग्री एवं विधि

पूजन सामग्री- पान, इत्र, दूध, धूप, कर्पूर, दियासलाई, नारियल, सुपारी, रोली, घी, लालवसा, मेवा, गंगाजल, फल, लक्ष्मी-प्रतिमा, कलावा, रुई, सिंदूर, शहद, गणेश-प्रतिमा, फूल, दूब, दही, दीप, जल-पात्र, मिठाई, तुलसी।

विधि- एक थाल में या भूमि शुद्ध करके नवग्रह बनाए। रुपया, सोना, चांदी, श्री लक्ष्मी जी, श्री गणेश जी व सरस्वती जी, श्री महेश आदि देवी-देवता को स्थान दें। यदि कोई धातु की मूर्ति हो तो उसको साक्षात रूप

मान कर पहले दूध, फिर दही से, फिर गंगाजल से स्नान कराके वस्त्र से साफ करके स्थान दें और स्नान करायें। दूध, दही व गंगाजल में चीनी बताशे डालकर पूजन के बाद सबको उसका चरणामृत दें। घी का दीपक जलाकर पूजन आरम्भ करें।

श्री लक्ष्मी जी कहानी

एक साहूकार के बेटी थी। वह हर रोज पीपल सींचने जाती थी। पीपल में से लक्ष्मी जी निकलती और चली जातीं। एक दिन लक्ष्मी जी ने साहूकार की बेटी से कहा कि तू मेरी सहेली बन जा। तब लड़की ने कहा मैं अपने पिता जी से पूछकर कल आऊंगी। घर जाकर पिताजी को सारी बात कह दी तो पिताजी बोले- वह तो लक्ष्मी जी हैं। अपने को क्या चाहिए, बन जा। दूसरे दिन लड़की फिर गई। जब लक्ष्मी जी निकल कर आई और कहा सहेली बन जा तो लड़की ने कहा बन जाऊंगी और दोनों सहेली बन गई। लक्ष्मी जी ने उसको खाने का न्योता दे दिया। घर आकर लड़की ने अपने बाप से कहा कि मेरी सहेली ने मुझे खाने को न्योता दिया है। तब बाप ने कहा कि सहेली के जीमने जाइयो पर जरा संभाल कर जाइयो। जब वह लक्ष्मी जी के याहं जीमने गई तो लक्ष्मी जी ने उसे शाल दुशाला ओढ़ने के लिए दिया, रुपये परखने के लिए दिये, सोने की चौकी, सोने की थाली में छत्तीस प्रकार का भोजन करा दिया। जीम कर जब वह जाने लगी तो लक्ष्मी जी ने पल्ला पकड़ लिया और कहा कि मैं तो तेरे घर जीमने जाऊंगी। तो उसने कहा आ जाइयो। घर जाकर चुपचाप बैठ गई। तब बाप ने पूछा कि बेटी सहेली के यहां जीम कर आई है और उदास क्यों बैठी है? तो उसने कहा पिताजी मेरे को लक्ष्मी जी ने इतना दिया, अनेक प्रकार के भोजन कराए परन्तु मैं कैसे जिमाऊंगी? अपने घर में तो कुछ भी नहीं है। फिर बाप ने कहा कि जैसा होगा जिमा देंगे परन्तु तू गोबर मिट्टी से चौका देकर सफाई कर ले। चार मुख वाला दीया

जलाकर लक्ष्मी जी का नाम लेकर रसोई में बैठ जाइयो। लड़की सफाई करके लड्डू लेकर बैठ गई। उसी समय एक रानी नहा रही थी। उसका नौलखा हार चील उठा कर ले आई और उसका लड्डू ले गई और वह नौलखा हार डाल गई। बाद में वह हार को तोड़कर बाजार में गई और सामान लाने लगी तो सुनार ने पूछा कि क्या चाहिए। तब उसने कहा कि सोने की चौकी, सोने का थाल, शाल, दुशाला दे दें, मोहर दें और सारी सामग्री दें। छत्तीस प्रकार का भोजन हो जाए, इतना सामान दें। सारी चीजें लाकर बहुत तैयारी करी और रसोई बनाई तब गणेश जी से कहा कि लक्ष्मी जी को बुलाओ। तो आगे-आगे गणेश जी और पीछे लक्ष्मी जी आई। उसने फिर चौकी डाल दी और कहा सहेली चौकी पर बैठ जा। जब लक्ष्मी जी ने कहा सहेली चौकी पर तो राजा रानी भी नहीं बैठे, कोई भी नहीं बैठा तो उसने कहा कि मेरे यहां तो बैठना पड़ेगा, मेरे मां-बाप, भाई-भतीजे, मेरे पोते-बहुएं क्या सोचेंगी, पड़ोसन क्या सोचगी? लक्ष्मी जी की सहेली बपनी थी, अट्ठाईस पीढ़ियों तक यही पर रहना पड़ेगा। फिर लक्ष्मी जी चौकी पर बैठ गई। तब उसने बहुत खातिर की, जैसे लक्ष्मी जी ने की वैसे ही उसने करी। लक्ष्मी जी उस पर खुश हो गई और घर में खूब धन लक्ष्मी हो गई। साहूकार की बेटी ने कहा कि मैं अभी आ रही हूँ। तुम यहीं बैठी रहना और वह चली गई। लक्ष्मी जी गई नहीं और चौकी पर बैठी रही। उसको बहुत धन-दौलत दिया। हे लक्ष्मी माता! जैसा तुमने साहूकार की बेटी को दिया वैसा सबको देना। कहते सुनते हुंकारा भरते अपने सारे परिवार को दियो, पीहर में देना, सुसराल में देना। बेटे, पोते को देना। हे लक्ष्मी माता! सबका दुख दूर करना, दरिद्रता दूर करना और सबकी मनोकामना पूर्ण करना। दीवाली के दूसरे दिन सब लोग धोंक खाओ। सारी औरतें अपनी सासुजी और नन्द को पैर छूकर रुपये देती जायें और साथ में लड्डू दें।

अन्नकूट : गोवर्धन पूजा

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ गोबर की मूर्ति बनाकर भगवान की पूजा करती हैं। संध्या समय अन्नादिक का भोग लगाकर दीपदान करती हुई परिक्रमा करती हैं। तत्पश्चात् उस पर गऊ का बास (बाधा) कुदाकर उसके उपले थापती हैं और बाकी को खेत आदि में गिरा देती हैं। इसी दिन नवीन अन्न का भोजन बनाकर भगवान को भोग भी लगाया जाता है जिसे अन्नकूट कहते हैं।

कथा- प्राचीन काल में दीपावली के दूसरे दिन ब्रजमण्डल में इन्द्र की पूजा हुआ करती थी। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- ''कार्तिक में इन्द्र की पूजा का कोई लाभ नहीं, इसलिए हमें गो-वंश की उन्नति के लिए पर्वत व वृक्षों की पूजा कर उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। पर्वतों और भूमि पर घास-पौधे लगाकर वन महोत्सव भी मनाना चाहिए। गोबर की ईश्वर के रूप में पूजा करते हुए उसे जलाना नहीं चाहिए, बल्कि खेतों में डालकर उस पर हल चलाते हुए अन्नोषधि उत्पन्न करनी चाहिए जिससे हमारे देश की उन्नति हो।''

भगवान श्रीकृष्ण का यह उपदेश सुनकर ब्रजवासियों ने ज्यों ही पर्वत, वन और गोबर की पूजा आरम्भ की, इन्द्र ने कुपित होकर सात दिन तक घनघोर वर्षा शुरू कर दी। परन्तु श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठाकर ब्रज को बचा लिया। फलतः इन्द्र को लज्जित होकर सातवें दिन क्षमा-याचना

करनी पड़ी। तभी से समस्त उत्तर भारत में गोवर्धन पूजा प्रचलित हुई। गोवर्धन पूजा करने से खेतों में अधिक अन्न उपजता है, रोग दूर होते हैं और घर में सुख-शान्ति रहती है।

भ्रातृ द्वितीया : भैया दूज

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भैया दूज का पर्व मनाया जाता है। यों तो सारे भारत में इस पर्व की धूम रहती है, परन्तु महाराष्ट्र में भाऊ बीज, गुजरात में भाई बीज, बंगाल में भाई फोटा व उत्तर प्रदेश में भ्रातृ द्वितीया के रूप में यह विशेष लोकप्रिय है। लोग इसे यम द्वितीया भी कहते हैं। यह सुखद अनुभूति का पर्व है। इस दिन जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसके हाथ का बना खाना ग्रहण करता है, वह धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है।

कथा- सूर्य के पुत्र-पुत्री यम और यमी में बहुत प्रेम था परन्तु बाद में राज्यकार्य के कारण यम अपनी बहन यमी अर्थात् यमुनाजी को भुल गए। तब एक दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया को बहन ने भाई को निमन्त्रण भेजा। यम उद्विग्न हो उठे, उन्हें बहन के टीके की याद आई। वे यमुना के घर पहुंचे, बहन वहुत प्रसन्न हुई। उसने भाई का टीका किया। टीके के बाद यम ने कुछ मांगने को कहा। बहन ने मांगा कि आज के दिन जो वहनें भाई का टीका करें, उनकी रक्षा होनी चाहिए।

भविष्योत्तर पुराण में इस कथा के अन्त में कहा गया है- ''हे युधिष्ठिर! यमुना ने कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को ही अपने भाई को निमन्त्रित किया था।'' अतः इस पर्व का नाम यम द्वितीया पड़ गया। इस दिन बहन के स्नेहपूर्ण हाथों से परोसा भोजन ग्रहण करना चाहिए।

आरती श्री गणेश जी की

सदा भवानी दाहिनी गौरी पुत्र गणेश।
पांच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥ टेक॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥ जय गणेश...

एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी॥ जय गणेश..

अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बाझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश.

पान चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा॥ जय गणेश.

दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी।
कामना को पूरा करो जाएं बलिहारी॥ जय गणेश.

आरती श्री अहोई माता की

जय होई माता जय होई माता।
तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु विधाता॥ जय०
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तू ही है जगमाता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥ जय०
माता रूप निरन्जन सुख-सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत नित मंगल आता॥ जय०
तू ही है पाताल बसन्ती तू ही है शुभदाता।
प्रभाव कर्म प्रकाशक जगनिधि से त्राता॥ जय०
जिस घर थारो वासा वाहि में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले मन नहीं धड़काता॥ जय०
तुम बिन सुख न होवे पुत्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव तुम बिन नस जाता॥ जय०
शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीर निधि जाता।
रतन चतुर्दश तोकू कोई नहीं पाता॥ जय०
श्री होई माँ की आरती जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता॥ जय०

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदित सेवत, हर विष्णु धाता॥ ॐ...
ब्रह्माणी रूद्राणी कमला, तु ही है जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ...
दुर्गा रूप निरंजनि सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि पाता॥ ॐ...
तू ही है पाताल बसतीं तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ॐ...
जिस घर तेरा बासा, जाहि में गुण आता।
कर न सके सो करले, असीमित धन पाता॥ ॐ...
तुम बिन यज्ञ नहीं होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता॥ ॐ...
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ...
महालक्ष्मी जी की आरती जो कोई जन गाता।
उर में आनंद समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ...

आरती श्री जगदीश जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे॥
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे॥ ॐ जय..
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसै मन का॥ प्रभु...
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का॥ ॐ जय..
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु...
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ॐ जय..
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ॐ जय..
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता॥ प्रभु...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय..
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति॥ प्रभु...
किस बिधि मिलूं दयामय! मैं तुमको कुमति॥ ॐ जय..
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु...
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय..
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु...
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय..